''अनुक्रमणिका''

अ नु क्र म णि का

प्राक्कथन

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - चित्रा मुद्गल के जीवन एवं साहित्य का संक्षिप्त परिचय — पृष्ठ 1 - 31

भूमिका

1 जीवन परिचय

1.1 जन्म

1.2 पारिवारिक परिचय

1.2.1 दादा जी का परिचय

1.2.2 दादी जी का परिचय

1.2.3 पिता जी का परिचय

1.2.4 माता जी का परिचय

1.2.5 भाई-बहन का परिचय

1.3 चित्रा जी के शैक्षणिक जीवन का परिचय

1.3.1 चित्राजी का शालेय जीवन

1.3.2 महाविद्यालयीन जीवन

1.4 चित्रा जी के वैवाहिक जीवन का परिचय

1.4.1 चित्रा जी के पति महोदय का परिचय

1.5 चित्रा जी के लेखन जीवन का परिचय

1.5.1 चित्रा जी के जीवन पर प्रभाव करने वाले घटक

1.5.2 सामंती वैचारिकता का प्रभाव

1.5.3 कला के प्रति रूचि

1.5.4 समाजसेवी संस्था

1.5.5 साहित्यिक मार्गदर्शन

1.6 चित्रा जी के गुण-विशेष

1.6.1 संवेदनशील स्वभाव

1.6.2 स्वाभिमान

1.6.3 वैचारिक दृढता

1.6.4 विद्रोह

1.6.5 आत्मविश्वास

1.6.6 कर्तव्यदक्षता

1.6.7 सादगीप्रियता

1.6.8 जिज्ञासा

1.7 कृतित्व

1.7.1 उपन्यास

1.7.2 कहानी-संग्रह

1.7.3 बाल-साहित्य

1.7.4 संपादित कहानी-संग्रह

1.7.5 अनुवाद

1.7.6 कविता

1.7.7 स्तंभ लेखन

1.7.8 अन्य गतिविधियाँ

1.7.9 पाठ्यक्रमों में समाविष्ट रचनाएँ

1.7.10 पुरस्कार एवं सम्मान

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय - विवेच्य कहानियों का वस्तुगत विवेचन 32 - 73

प्रास्ताविक

2.1 पारिवारिक संबंध का भावात्मक चित्रण

2.1.1 पिता-पुत्र के संबंध में उत्पन्न दूरी

2.1.2 भाई-भाई संबंधों में बढ़ती दूरी

2.1.3 बुआ-भतिजी के संबंधों में दूरी

2.2 पीढ़ीगत संघर्ष का चित्रण

2.2.1 परिवार नियोजन के कारण वैचारिक संघर्ष

2.3 मनोवैज्ञानिक चित्रण

2.3.1 वैचारिक कठोरता के कारण बदलती मानसिकता

2.3.2 बालश्रमिक की भावनिक विवशता

2.4 दाम्पत्य जीवन का चित्रण

2.4.1 स्वास्थ्य के कारण टूटता दाम्पत्य संबंध

2.4.2 अहम् के कारण दाम्पत्य संबंध में टूटन

2.4.3 वैचारिक अंतर के कारण दाम्पत्य संबंध में टूटन

2.5 नारी-जीवन का वैविध्यपूर्ण चित्रण

2.5.1 न्यायिक अधिकार के लिए संघर्षशील नारी

2.5.2 पारिवारिक उपेक्षा की शिकार नारी

2.5.3 वैधव्य के कारण अकेलेपन की शिकार नारी

2.5.4 भावनिक विवशता की शिकार नारी

2.6 आर्थिक यथार्थता का चित्रण

2.6.1 उच्चवर्गीय लोगों की धनलिप्सा का चित्रण

2.6.2 निम्नवर्गीय लोगों की आर्थिक विवशता का चित्रण

2.7 सामाजिक समस्या का चित्रण

2.7.1 बाल अपराध की समस्या

2.8 राजनीतिक स्वरूप का चित्रण

2.8.1 राजनीतिक दाँवपेच की शिकार जनता

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय - विवेच्य कहानियों का नारी-विद्रोह : स्वरूपगत विवेचन — **पृष्ठ** 74 - 111

प्रास्ताविक

3.1 रिश्तों के आधार पर किया गया विद्रोह

3.1.1 माँ के रूप में विद्रोह

3.1.2 माँ का व्यक्तिगत स्तर पर किया गया विद्रोह

3.1.3 पत्नी के रूप में विद्रोह

3.1.4 बेटी के रूप में विद्रोह

3.1.5 बहन के रूप में विद्रोह

3.1.6 सास के रूप में विद्रोह

3.1.7 प्रेमिका के रूप में विद्रोह

3.1.8 बुआ के रूप में विद्रोह

3.2 परिस्थिति के आधार पर विद्रोह

3.2.1 पारिवारिक उपेक्षा के विरूद्ध विद्रोह

3.2.2 वैधव्य की समस्या के विरूद्ध विद्रोह

3.2.3 आर्थिक समस्या के विरूद्ध विद्रोह

3.3 शोषण के विरूद्ध विद्रोह

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय - विवेच्य कहानियों का नारी-विद्रोह : दांपत्य जीवन-संदर्भ — **पृष्ठ** 112 - 132

प्रास्ताविक

4.1 अर्थाजन के कारण विद्रोह

4.2 पति के निठल्लेपन के कारण विद्रोह

4.3 पति शोषण के कारण विद्रोह

4.4 व्यसनाधिन पति के अमानवीय व्यवहार के विरूद्ध विद्रोह

4.5 असुविधा से उत्पन्न विद्रोह

4.6 अधिकार के लिए किया गया विद्रोह

4.7 वैचारिक भिन्नता के कारण विद्रोह

निष्कर्ष

पंचम अध्याय - विवेच्य कहानियों का नारी-विद्रोह : सामाजिक जीवन-संदर्भ — **पृष्ठ** 133-145

प्रास्ताविक

5.1 सामाजिक रूढ़ियों के विरूद्ध विद्रोह

5.2 अधिकार के लिए विद्रोह

5.2.1 शैक्षिक अधिकार के लिए विद्रोह

5.2.2 न्यायिक अधिकार के लिए किया गया विद्रोह

5.3 अंधविश्वास के विरूद्ध विद्रोह

5.4 कामकाजी नारी का शोषण विरूद्ध विद्रोह

5.5 आर्थिकता के विरूद्ध विद्रोह

निष्कर्ष

उपसंहार 146-150

संदर्भ ग्रंथ-सूची 151-156

* * * *